पाश्चात्य दर्शन का परिचय (Introduction of Western Philosophy)

पाश्चात्य दर्शन का जन्म मुख्यतः ग्रीस से माना जाता है। ग्रीस दार्शनिकों ने जड़–जगत् का विवेचन किया तथा उसके पश्चात् आत्मा का विश्लेषण किया। अंततः जड़ तथा आत्मा के समन्वयन का प्रयास किया गया। ग्रीस दर्शन का महत्त्व इस बात से इंगित होता है कि इसके बिना पाश्चात्य दर्शन को अपूर्ण ही कहा जाएगा।

सर्वप्रथम वास्तविक तौर पर जिस दार्शनिक ने दर्शन के स्पष्ट सिद्धांत तथा विचार प्रकट किये उसका नाम प्लेटो है। प्लेटो के पश्चात् उनका शिष्य अरस्तु है जिसने दर्शनशास्त्र को आदर्शवाद से निकालकर व्यवहारिकता प्रदान करने की कोशिश की और वह इसमें सफल भी रहा। इसके पश्चात् तर्कबुद्धिवाद, अनुभववाद, प्रत्ययवाद या अस्तित्ववाद जैसे सिद्धांतों के माध्यमों से विभिन्न महान दार्शनिकों ने पाश्चात्य दर्शन को परिस्कृत किया।

पाश्चात्य जगत् में दर्शन को 'फिलॉसपफी' (Philosophy) के नाम से जाना जाता है। पाश्चात्य शब्द 'फिलॉसपफी' दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् Philos+Sopia, 'Sophia' शब्द का अर्थ है– बुद्धि। इसलिये 'फिलॉसपफी' (Philosophy) का शाब्दिक अर्थ है– बुद्धि–प्रेम या बुद्धि–अनुराग। इस प्रकार पाश्चात्य दर्शन या दार्शनिकों का उद्देश्य प्रज्ञावान या बुद्धिवान व्यक्ति बनाना/बनना है। पाश्चात्य दर्शन की प्रमुख विशेषता रही है कि इसमें ज्ञान पर अत्यधिक बल प्रदान किया गया।

भारतीय संदर्भ में दर्शन का उद्देश्य पाश्चात्य दर्शन के उद्देश्य से भिन्न है। भारत में फिलॉसपफी को 'दर्शन' कहा जाता है। 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धतु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना' या 'जिसके द्वारा देखा जाए। दर्शन विद्या के माध्यम से 'तत्त्वों' का साक्षात्कार करने पर बल दिया जाता है। भारतीय दार्शनिकों का बल तत्त्व के साक्षात्कार के साथ ही तत्त्व की अनुभूति प्राप्त करने पर भी रहा है। इसलिये भारतीय दार्शनिक कभी–कभी एक तपस्वी, खोजी या साधक के रूप में दिखाई देता है। जबकि पाश्चात्य दर्शन को भाषा–सुधार तथा प्रत्ययों का स्पष्टीकरण कहा जाता है।